AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

उच्चतर माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Authors
शांति टण्डन
शोधार्थी एम.एड. प्रशिक्षार्थी
डॉ. प्राची अनर्थ
शोध मार्गदर्शिका
शिक्षा विभाग
पं. हरिशंकर शुक्ल स्मृति महाविद्यालय
कचना, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

प्रस्तुत शोध अध्ययन में महासमुंद जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 14 से 17 वर्ष के 140 विद्यार्थियों (70 अंग्रेजी माध्यम एवं 70 हिन्दी माध्यम) पर आधारित है, जिसका मुख्य उद्देश्य शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना था। शोधकर्त्ता ने सर्वेक्षण विधि का उपयोग करते हुए डॉ. टी. आर. शर्मा द्वारा निर्मित प्रमाणित प्रश्नावली के माध्यम से प्रदत्तों का संकलन किया और सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमानिक विचलन तथा क्रांतिक अनुपात सी. आर. का प्रयोग किया। शोध के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों ने लिंग के आधार पर शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर पाया गया। (जहां छात्राओं का मध्यमान 28.05 और छात्रों का 24.74 रहा) जबकि हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की तुलना में कोई सार्थक अंतर दृष्टिगोचर नहीं हुआ। अंततः यह निष्कर्ष निकलता है कि शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में शिक्षा का माध्यम एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं, तथा इस अध्ययन के परिणाम शैक्षिक जगत में समस्याओं के निवारण और अवलोकन प्रणाली के विकास में सहायक हो सकते है।

मुख्य शब्द

उच्चतर *माध्यमिक विद्यालय, विद्यार्थी, अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम.*

प्रस्तावना

भाषा एक संचार का माध्यम है जिससे व्यक्ति अपने विचारों का आदान–प्रदान करता है उसी प्रकार शिक्षा भी अंग्रेजी माध्यम तथा हिन्दी माध्यम के द्वारा दिया जाता है। वर्तमान समय में देखा जाए तो अंग्रेजी माध्यम निजी विद्यालयों तथा केन्द्रीय विद्यालयों में होती है परन्तु शासकीय विद्यालय में हिन्दी माध्यम का अधिक वार्तालाप किया जाता है जिससे उच्च शिक्षा में बच्चे समस्याओं से जूझते हैं। उनकी रूचि भाषा के कारण कम हो जाती है जिससे वे पूर्ण जूझते हैं। उनकी रूचि भाषा के कारण कम हो जाती है जिससे वे पूर्ण बौद्धिक विकास करने में असंभव रहते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय कार्य के लिये दोनों भाषाओं को महत्व दिया जाता है जिससे अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा भी असंभव होता है।

अध्ययन का औचित्य

शैक्षिक क्षेत्र मे जब कोई अनुसंधान कार्य किया जाता है तो उस अध्ययन की उपादेयता, महत्व, प्रकृति आदि का औचित्य सिद्ध करना इसलिए आवश्यक है कि इसके द्वारा यह सिद्ध कर सके कि इस अनुसंधान के परिणाम व निष्कर्ष शैक्षिक जगत् को किस प्रकार प्रभावित करेगें। इसके अतिरिक्त औचित्य शैक्षिक समस्या की उपादेयता को सिद्ध करने में भी सहायक होता

हैं। कक्षा शिक्षण, शिक्षक और छात्र के बीच अन्तःक्रिया की प्रक्रिया होती है। एक सुव्यवस्थित अवलोकन प्रणाली में निर्देशात्मक अधिगम, शिक्षक छात्र परस्पर उचित अंतःक्रिया की पहचान तथा शिक्षण वर्गीकरण का पूर्ण प्रतिनिधित्व होता है कि इस प्रकार स्पष्ट है कि अवलोकन पद्वति द्वारा शिक्षण गतिविधियों, शिक्षण दक्षता तथा इसके घटकों के र्प्रति जागरूकता उत्पन्न की जा सकती है। चूँकि किसी देश का विकास गुणवत्तायुक्त शिक्षा से प्रभावित होता है कि शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षक के व्यवहार से प्रभावित होती है। शिक्षक के व्यवहार को छात्र शिक्षक अन्तःक्रिया के अवलोकन से ज्ञात किया जा सकता है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

1. **अहमद (2000)** ने लिंग का प्रभाव शैक्षणिक उपलब्धि के कारक शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया। उन्होनें किशोर लडक़े–लड़िकयों के विभिन्न क्रमिक स्तर के एवं शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा अंतर के मध्य अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में मुम्बई के अंगेजी माध्यम स्कूल के 120 विद्यार्थियों का चयन किया। सभी में उपकरण का प्रयोग किया और विभिन्न चरों पर प्रभाव देखा गया।
2. **बावा और कौर (2000)** रचनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया। प्रतिदर्श में पटियाला जिले के पाँच तहसीलो से 30 माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों से कक्षा 10 में अध्ययनरत् 600 छात्रों को लिया गया। अध्ययन के परिणाम निम्न थेः
   - छात्रों के सन्दर्भ में सामाजिक विज्ञान को छोडक़र सभी विद्यालयी विषयों में रचनात्मकता के चारो मापकों के बीच सार्थक सकरात्मक सह–सम्बन्ध था।
   - सामाजिक विषयों एवं सामान्य विज्ञान की अपेक्षा भाषा में उपलब्धि रचनात्मक विचार के सन्दर्भ में अधिक अच्छी थी।
3. **सिंग (2007)** ''हाई स्कूल विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन'' किया। अध्ययन के लिए न्यादर्श के रूप में बड़ौदा के हाई स्कूल के कक्षा अध्ययन'' किया। अध्ययन के लिए न्यादर्श के रूप में बड़ौदा के हाई स्कूल के कक्षा 11वीं के 30 छात्र और 30 छात्राओं को यादृच्छिक रूप से चयन किया गया। वार्षिक परीक्षा में प्राप्त अंकों को उनकी शैक्षिक उपलब्धि माना गया। निष्कर्ष में पाया कि वार्षिक परीक्षा में छात्राओं ने सार्थक रूप से उच्च उपलब्धि प्रदर्शित की।
4. **शुक्ला प्रभावती (2012)** उपलब्धि प्रेरणा एवं साहसिकों में सृजनात्मकता पर शैक्षिक स्तर का प्रभाव पर अनुसंधान कार्य किया। इस शोध का मुख्य उद्देष्य बिलासपुर जिले के बहुस्तरीय उद्योगों में कार्यरत साहसीकर्मियां की उपलब्धि प्रेरणा और सृजनात्मकता को दृष्टव्य करना है। शोध का निष्कर्ष यह निकाला की साहसिकों की उपलब्धि शैक्षिक स्तर को बढ़ने से नही बल्कि सृजनात्मक शैक्षिक स्तर का बढ़ोत्तरी के साथ बढ़ती है।
5. **सैनी, धनवीर (2007)** गहलावत, दया (2010) और मायरलेस (2013) ने उच्च एवं निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन। निष्कर्ष यह पाया गया कि उच्च उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर पाया गया।
6. **सुब्रामण्यम (2011), (2012) और अहमद (2009)** ने लिंग का प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि के कारक शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया तथा अनुदानित एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अध्ययन की समीक्षा

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सैनी, धनवीर (2007),गहलावत, दया (2010) और मायरलेस (2013) ने उच्च एवं निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन। निष्कर्ष यह पाया गया कि उच्च उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर पाया गया । सुब्रामण्यम (2011), (2012) और अहमद (2009) ने लिंग का प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया तथा अनुदानित एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

अध्ययन का उद्देश्य

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

H_1: उच्चतर माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर पाया जाएगा।

H_2: उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर पाया जाएगा।

H_3: उच्चतर माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर पाया जाएगा ।

अध्ययन का शैक्षिक महत्व

संस्थागत वातावरण का विद्यार्थियों के शैक्षणिक स्तर के निर्माण एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ये शैक्षणिक स्तर एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा के निर्माण के आधार ही नहीं अपितु वे स्तम्भ है, जिन पर मानव जीवन के समस्त पक्ष निर्भर करते है। व्यक्ति अपने कार्य करने से पहले का अनुमापन तथा कार्य करने के बाद की उपलब्धि स्तर को सफलता–असफलता के अनुभव के द्वारा लक्ष्य का निर्धारण करता है, क्योंकि व्यक्ति जो कार्य करता है वह किसी न किसी उद्देश्य से सम्बन्धित होता है, व्यक्ति जो कार्य करता है वह किसी न किसी उद्देश्य से संबन्धित होता है। जब आकांक्षायें आदर्श स्थिति से ऊँची होती हैं तो व्यक्ति प्रगति का प्रयास करता है और आंकाक्षाओं की तीव्रता लक्ष्यों की ऊचाईयों पर निर्भर करती है। व्यक्ति के कार्य, करने की आकांक्षा पर निर्भर होता है तथा यही आकांक्षा व्यक्ति के लक्ष्यों को सही निर्धारित करती है। व्यक्ति के सोचने की मात्रा तथा कार्य करने की मात्रा शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करती है, विभिन्न व्यक्तियों के सोचने तथा कार्य करने की क्षमता भी भिन्न भिन्न होती है।

शोध प्रविधि

प्रत्येक शोधकर्ता अपने अनुसंधान कार्य विधि का चयन करता है ताकि अपने उद्देश्यों की प्राप्ति कर सके। समस्या का सावधानीपूर्वक अध्ययन एवं विश्लेषण संबंधित पूर्व साहित्य पर पुर्नविचार करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकला है कि यह शोध कार्य सर्वेक्षण विधि को इस शोध के उद्देश्यों को पूर्ण करने तथा उपयुक्त निर्वाचन एवं प्रदत्त संग्रह की विधि कि लिए चुना गया है। प्रस्तुत शोध प्रस्ताव में शोध प्रविधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

सार्वभौम

सार्वभौम से तात्पर्य उस क्षेत्र तथा उन समस्त व्यक्तियों से है जिनकी शोध कार्य के लिए न्यादर्श के रुप में चुना गया है। प्रस्तुत शोध पत्र उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन" में 9वीं, 11वीं के विद्यार्थियों को लिया गया है। ये सभी विद्यालय महासमुंद जिले के शहरी के अंतर्गत है जिसमें 70 हिन्दी माध्यम और 70 अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों को लिया गया।

न्यादर्श

भौतिक संसार के समान, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक संसार भी व्यवस्थित हैं, उनमे निरंतरता है, क्रमबद्धता है, स्थिरता है। सांख्यिकी निरंतरता के नियम के अनुसार यदि एक व्यापक जनसंख्या में से कुछ न कुछ इकाईयों का संयोगिक आधार पर चयन किया जाए तो, इस प्रकार पर चयन की गई इकाईयों सम्पूर्ण जनसंख्या की विशेषताओं की प्रतिनिधि मानी जाती है। इसी प्रकार व्यापक संख्याओं में स्थिरता के नियम के अनुसार जनसंख्या का स्वरूप अल्प समय में परिवर्तन नहीं होता है।

स्वतंत्र चरः उच्चतर माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों।

आश्रित चरः शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा।

उपकरणः उपकरण के रूप में विद्यार्थियों कि शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा मापने के लिए ''डॉ. टी.आर. शर्मा'' द्वारा

निर्मित ''शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण'' प्रश्नावली का प्रयोग किया है। इस मापनी में 38 प्रश्न दिए गये है। प्रत्येक प्रश्न के लिए दो विकल्प दिए गये है इनमें से किसी एक पर (अ) का निशान लगाना है।

अध्ययन की परिसीमा

इस शोध पत्र में परिसीमन निम्नलिखित हैः (1) प्रस्तुत अध्ययन के लिए महासमुन्द क्षेत्र का चयन किया गया है। (2) इस अध्ययन हेतु केवल उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों का ही चयन किया गया है। (3) प्रस्तुत अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर के 14 से 17 वर्ष के हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं का अध्ययन किया गया है। (4) अध्ययन में 9वीं तथा 11वीं के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों के आधार पर उनकी शिक्षा का मापन किया गया है। (5) प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों के शैक्षिक वातावरण को जानने के लिए डॉ. टी. आर शर्मा द्वारा निर्मित प्रमाणित परीक्षण का प्रयोग किया गया है।(6) प्रस्तुत अध्ययन में महासमुन्द क्षेत्र में स्थित शहरी विद्यालय के अंग्रेजी माध्यम के 70 एवं हिन्दी माध्यम के 70 विद्यार्थियों को प्रतिदर्श में लिया गया है, जिनकी आयु 14–17 वर्ष है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

सांख्यिकीय अनुसंधान का मूल आधार है विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरण का शिक्षा पर प्रभाव ज्ञात करने के लिए प्रदत्तों का संग्रह किया गया उनका सांख्यिकीय विश्लेषण करने का प्रयास किया गया। संकलित प्रमाणिकृत प्रदत्तों का प्रयोग परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं सत्यापन हेतु किया जाता है। अनुसंधान प्रकिया मे प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन का महत्वपूर्ण स्थान है। प्राप्त आँकड़ों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा (CR) परीक्षण, अग्रलिखित सूत्रों से ज्ञात की गई तत्पश्चात् सार्थक सह–संबंध और सार्थक अंतर के लिए सार्थकता की परीक्षण के माध्यम ज्ञात की गई है।

01. उच्चतर माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा मे ं सार्थक अंतर पाया जायेगा।

तालिका क्रमांक 01

क्रमांक	अंग्रेजी माध्यम का अध्ययन	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रतिक अनुपात
01	छात्र	35	24.74	6.37	2.43
02	छात्राएं	35	28.05	5.00	
df = 68		p<0.05		सार्थक है।	

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

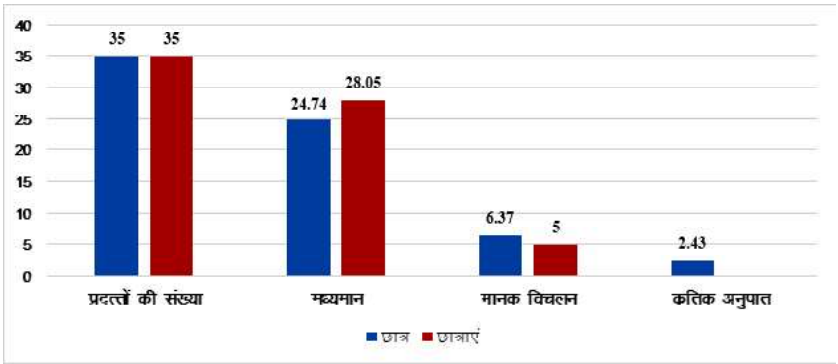

व्याख्याः अंग्रेजी माध्यम के छात्र का शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का मध्यमान 24.74 अंग्रेजी माध्यम के छात्र का शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का मध्यमान 24.74 एवं छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरेणा का मध्यमान 28.05 है तथा उनका सी आर. 2.43 है, जो 0.05 स्केल पर देखने पर सार्थक अंतर पाया गया। इस प्रकार परिकल्पना 1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर पाया गया, अतः स्वीकृत होती है।

निष्कर्षः उपरोक्त विवरण के आधर पर यह निष्कर्ष निकलता है कि अंग्रेजी माध्यम के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर पाया गया। 2. 1. 2. कत्रि उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के छात्र एवं छात्राओ की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

तालिका क्रमांक 2

क्रमांक	हिन्दी माध्यम का अध्ययन	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रतिक अनुपात
01	छात्र	35	25.17	5.54	1.57
02	छात्राएं	35	27.14	4.97	
df = 68		p<0.05		सार्थक नहीं हैं।	

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

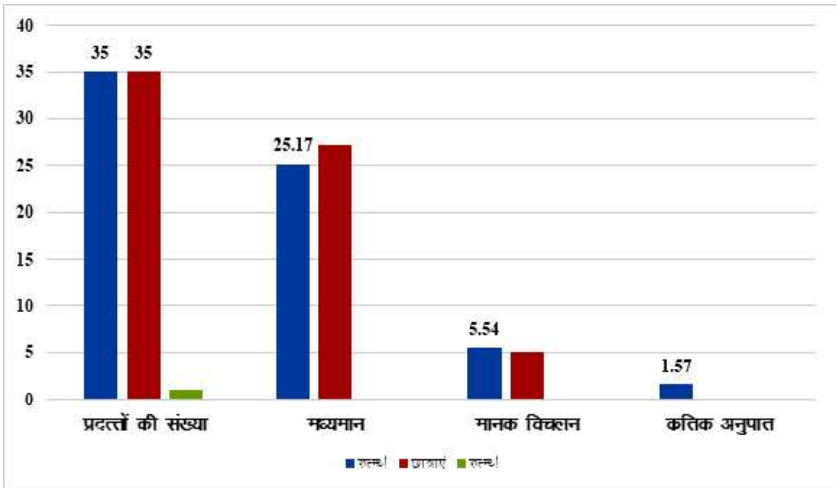

व्याख्याः हिन्दी माध्यम के छात्र का शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का मध्यमान 25.17 एवं छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का मध्यमान 27.14 है तथा उनका सी आर. 1.57 है, जो 0.05 स्केल पर देखने पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इस प्रकार परिकल्पना 2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी माध्यम के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर नहीं पाया गया, अतः अस्वीकृत होती है।

निष्कर्षः उपरोक्त विवरण के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि हिन्दी माध्यम के छात्र एवं छात्राओ की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियो ं की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

तालिका 03

क्रमांक	अध्ययन का क्षेत्र	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात
01	अंग्रेजी माध्यम	70	26.15	5.36	0.24
02	हिन्दी माध्यम	70	26.40	6.64	
df = 168		p<0.05		सार्थक नहीं है	

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

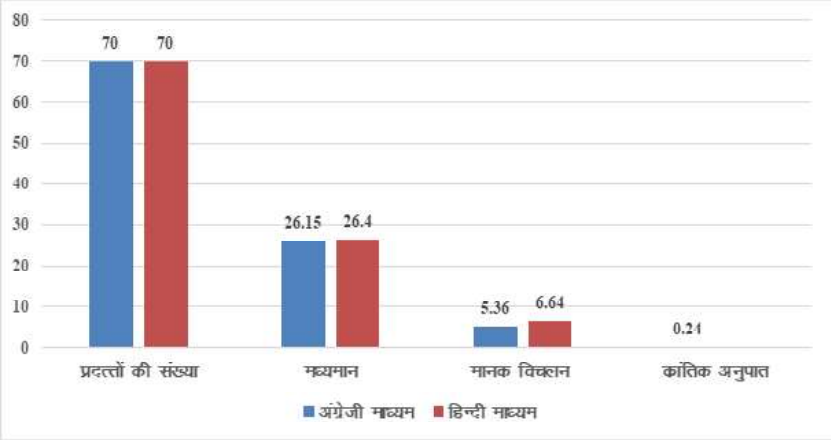

व्याख्या: अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों शैक्षणिक उपलब्धि अभिर्प्रेरणा का मध्यमान 26.15 एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों शैक्षणिक उपलब्धि अभिर्प्रेरणा का मध्यमान 26.40 है तथा उनका सी.आर. 0.24 है, जो 0.05 स्केल पर देखने पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष: उपरोक्त विवरण के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि अंग्रेजी माध्यम एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों शैक्षणिक उपलब्धि अभिर्प्रेरणा में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष एवं विवेचना

परिकल्पना के स्वीकृति से प्राप्त परिणाम से यह स्पष्ट होता है कि:

1. अंग्रेजी माध्यम के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर पाया गया।
2. छात्र एवं छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के लिंग के आधार पर सार्थक अंतर पाया गया।
3. इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा मे शिक्षा की मार्ग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

संदर्भ सूची

1. धन्दा, विमला व चिकारा, सुधा (1998) गृह विज्ञान के विद्यार्थियों ने आत्य संकल्पना का शैक्षिक स्तर व उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन किया, *फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन,* एनसीईआरटी, नई दिल्ली, वाल्युम–1, पृ. 812।
2. इफिलो, आर. डी.चारी.डी. और फिलिप, बी. (1947) कम उपलब्धि अभिप्रेरणा वाले छात्रों की शैक्षिक प्रगति व व्यावहारिक परिवर्तनों के बारे में अध्ययन किया, सेकेण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, एनसीईआरटी, नई दिल्ली, पृ. 131–139।
3. फेल्ड, हुसैन डी.एक.; क्लसा नियार, एल डील (1962) *निम्न एवं उच्च बुद्धि वाले छात्रों में उत्तेजन बुद्धिमानी व उपलब्धि के विषय में अध्ययन,* एनसीईआरटी, नई दिल्ली।
4. जायसपाल, सीताराम (1999) *व्यक्तित्व का मनोविज्ञान.* अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृ. 145–151।
5. नायडू, के.जे. (1998) 'औपचारिक व अनौपचारिक रूप से शिक्षिक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया. थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, एनसीईआरटी, नई दिल्ली, वाल्युम–1 पृ. 661।
6. शाह एवं शर्मा (1984) शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन, सेकेण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, एनसीईआरटी, नई दिल्ली, पृ. 341।
7. तिवारी, गोविंद (1987) *पैरेन्ट चाइल्ड रिलेशनशिप.* आगरा साइकोलॉजिकल रिसर्च सेल, आगरा, पृ. 113–115।

––==00==––